सप्तम अध्याय

उपसंहार ।

सप्तम अध्याय

उपसंहार :-

शिवभारत सत्रहवीं शताब्दी का प्रख्यात महाकाव्य है । मैंने सम्पूर्ण अध्ययन के लिए इस महाकाव्य को चुना तथा यथाशक्ति इस महाकाव्य का समालोचन प्रस्तुत प्रबन्ध में किया है । "शिवभारत" कई प्रकार से अत्यन्त महत्वपूर्ण है । यह एक ऐतहासिक महाकाव्य है तथा ऐतिहासिक साधन के रूप में इतिहास-लेखकों ने इसको आधार स्वरूप माना है परन्तु भाषा सौष्ठव एवं काव्य-गुणों की दृष्टि से भी यह महाकाव्य बहुत ही आकर्षक है । दुर्भाग्यवश यह काव्य अपूर्ण ही उपलब्ध होता है । सम्पूर्ण लिखा भी गया था अथवा नहीं, यह कहना अत्यन्त कठिन है । इस काव्य के लेखक कवीन्द्र परमानन्द का "परमानन्दकाव्य" के नाम से एक अन्य ग्रन्थ भी प्रकाशित हो गया है । इसमें शिवभारत के अन्तिम भाग के कुछ अंश भी समाविष्ट हैं ऐसा सम्पादक मानते हैं, परन्तु साधारण रूप से इस काव्य के श्लोक शिवभारत से अत्यन्त भिन्न ही लगते हैं । भाषा, छन्द, रसात्मकता इत्यादि सभी दृष्टियों से दोनों काव्य एकदम भिन्न हैं ।

यह माना जाता है कि कवीन्द्र परमानन्द काफी समय तक जीवित रहे, अर्थात कवि ने काव्य अवश्य पूरा किया होगा, किन्तु शिवाजी की मृत्यु के बाद महाराष्ट्र-समाज में अस्थिरता आ गई इसी कारणवश इस महाकाव्य का अधिक प्रचार नहीं हो पाया, इसीलिए इस काव्य की अधिक प्रतियाँ उपलब्ध नहीं होती तथा जो दो तीन प्रतियाँ उपलब्ध हैं वे भी पूर्ण नहीं हैं ।

तन्जौर में इस ग्रन्थ का तमिल अनुवाद भी उपलब्ध होता है किन्तु वह भी अपूर्ण ही है । इस प्रकार आज की स्थिति में इस अपूर्ण काव्य से ही सन्तुष्ट हो कर मुझे अपना अध्ययन प्रस्तुत करना पड़ रहा है, किन्तु यह अपूर्ण काव्य भी काव्य-गुणों की दृष्टि से अतिविशाल है तथा आकार से भी इसको छोटा नहीं कहा जा सकता । उपलब्ध स्थिति में भी इसकी श्लोक-संख्या रघुवंश जैसे प्रख्यात महाकाव्य की श्लोक-संख्या से दुगुनी है । पूर्ण अवस्था में तो इसके सौ अध्याय होने चाहिए । जैसा कि कवि ने स्वयं ही निर्देश किया है -

"इत्यनुपुराणे सूर्यवंशे निवासकर कवीन्द्र परमानन्द प्रकाशितायामध्याय-शतसंमितायां वैयासिक्यां संहितायां - - - - - - नाम----अध्याय: ।"

इस प्रकार ये रामायण, महाभारत या पुराणों जैसा बृहदाकार ग्रन्थ हो सकता है । महाकाव्य की दृष्टि से इसकी विस्तृत चर्चा प्रस्तुत प्रबन्ध में की गई है ।

प्रथम अध्याय में कवीन्द्र परमानन्द के स्थितिकाल बहुज्ञता, व्यक्तित्व एवं उनकी (परमानन्द की) रचनाओं के विषय में बताया गया है तथा द्वितीय अध्याय में शिवभारत का एक ऐतिहासिक महाकाव्य के रूप में अध्ययन किया गया है अर्थात् काव्यशास्त्रियों द्वारा निर्धारित महाकाव्य के नियमों के आधार पर शिवभारत का महाकाव्यत्व तथा ऐतिहासिकता पर विचार किया गया है । तृतीय अध्याय में साहित्यिक-समालोचन के अन्तर्गत शिवभारत के भावपक्ष तथा कलापक्ष पर विचार किया गया है । भावपक्ष के अन्तर्गत अंगीरस तथा अंग रसों का विवेचन किया गया

है तथा कलापक्ष के अन्तर्गत काव्य में प्रयुक्त अलंकार, छन्द, गुण भाषा तथा शैली का समालोचन किया गया है । चतुर्थ अध्याय में शिवाजी के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डाला गया है । पन्चम अध्याय के अन्तर्गत शिवभारत में चित्रित अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियों की चर्चा की गई है । षष्ठ अध्याय लोक-चित्रण हैं, इसमें तत्कालीन लोक-जीवन में प्रचलित रीति-रिवाज, विश्वास तथा मान्यताओं पर प्रकाश डाला गया है । सप्तम अध्याय तो उपसंहार ही है अर्थात इसमें निष्कर्ष रूप में शिवभारत के महत्व पर प्रकाश डाला है ।

वन्द्यः कोऽपि सुधास्यन्दास्कन्दी स सुकवेर्गुणः ।
येनायाति यशः कायः स्थैर्यं स्वस्य परस्य च ।।[1].

"अर्थात अमृत के प्रभाव को भी तुच्छ कर देने वाला एवं अनिर्वचनीय सुकविजनों का गुण वन्दनीय है, जिसके प्रभाव से अपना तथा पराया यशरूपी शरीर अमर हो जाता है ।"

प्रस्तुत उक्ति कवीन्द्र परमानन्द विरचित शिवभारत महाकाव्य के लिए सर्वथा उपयुक्त है । कवीन्द्र परमानन्द ने शिवाजी के चरित्र को इतिहास के शुष्क पृष्ठों से निकालकर अपनी कल्पना के द्वारा मांसल, सजीव एवं रोचक बना कर मुखर चित्रमय काव्य के रूप में प्रस्तुत किया है ।

---

1. कल्हण - कृत राजतरंगिणी 1/3

कवि ने इस काव्य की रचना 17 वीं शताब्दी में की जबकि मुसलमानों का शासन था, उनके शासन-काल में हिन्दुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार होते थे, तभी तो कवि ने शिवाजी को विष्णु के अवतार के रूप में माना है, जिसका जन्म ही पृथ्वी पर धर्म की स्थापना के लिए हुआ है। शिवाजी ने इन भीषण परिस्थितियों में अपने धर्म, जाति एवं मर्यादा की रक्षा के लिए अपने आदर्शों का अधिक दृढ़ता से पालन करते हुए मुस्लिम शासकों का सामना किया। मराठी के सम्पूर्ण साहित्य में शिवाजी की वीर रसात्मक गाथाओं की प्रचुरता है। शिव-भारत की रचना कर कवि ने वीर भावों को प्रोत्साहन दिया है। यह एक महत्वपूर्ण काव्य है। कवि ने इतिहास के कठिन सत्यों तथा युद्ध आदि के भीषण वातावरण को लेकर काव्य-रचना की है।

"शिवभारत" एक चरित-प्रधान काव्य है किन्तु उससे घटनाओं के संगठन, वस्तुओं के रोचक विवरण तथा भावों व रसों के निरूपण में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँचने पाई है। काव्य में घटना, भाव, रस तथा वर्णन के सौष्ठव से नायक के चरित्र का ही विकास होता दिखाई पड़ता है।

शिवभारत महाकाव्य का सर्वाधिक महत्व ऐतिहासिक काव्य के रूप में है। काव्य का वातावरण ऐतिहासिक है। उसी देश काल की संस्कृति तथा सभ्यता का प्रयोग कर काव्य की घटना, चरित्र तथा अन्य समस्त क्रिया-कलाप को ऐतिहासिक काव्य बिल्हणकृत विक्रमाङ्कदेवचरित से की जा सकती है। दोनों ही काव्यों में ऐतिहासिक घटनाक्रम की विशेष

महत्व दिया गया है । जहाँ तक काव्य-कला का प्रश्न है, तो निस्सन्देह विक्रमाङ्कदेवचरित उच्च कोटि का काव्य है, किन्तु उससे कम उच्चकोटि का काव्य शिवभारत भी नहीं है । कल्पना-प्रवणता भाषा सौन्दर्य एवं भाव-पक्ष की सुन्दरता के लिए विक्रमाङ्कदेवचरित प्रसिद्ध है । ये सभी गुण शिवभारत में भी उपलब्ध है । वस्तुतः काव्य-कला की भी दृष्टि से शिवभारत संस्कृत काव्य-कोष की अमूल्य निधि है ।

शिवभारत में चित्रित समाज की चर्चा अन्यत्र की गई है ।[1] अतः प्रस्तुत प्रबन्ध में समाज के विषय में विस्तृत चर्चा नहीं की गई है फिर भी संक्षेप में हम यह कह सकते है कि उस समय का समाज अस्थिर था । लगातार युद्ध होते रहते थे, जिसके कारण समाज में अस्थिरता आ गई थी । स्त्री को घर तथा बाहर दोनों स्थानों पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था । स्त्री समाज में आदर की दृष्टि से देखी जाती थी । स्त्री को सेनापतित्व करते हुए भी दर्शाया गया है ।

उस समय के समाज में अनेक प्रकार के संस्कारों का महत्व था जैसे - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, उपवेशन तथा विवाह इत्यादि का उल्लेख प्राप्त होता है ।

वर्ण-व्यवस्था का भी उल्लेख प्राप्त होता है यद्यपि उस समय वर्ण-व्यवस्था प्रायः समाप्त हो हो गई थी । फिर भी एक स्थान पर चारों वर्णों का उल्लेख प्राप्त होता है । शिवभारत में ब्राहमण को भी क्षात्र-कर्म करते हुए दर्शाया गया है, किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि

---

1. शिवभारत में चित्रित समाज (एम.फिल. प्रबन्ध)

वर्ण-व्यवस्था नहीं थी । समाज में ब्राहमणों को उच्च स्थान प्राप्त था ।

उस समय देश में मुसलमानों का शासन था अतः हिन्दू प्रजा पर अत्याचार अवश्य होता रहा होगा, तभी तो कवि ने शिव-भारत में धर्म-ह्रास तथा पृथ्वी का ब्रह्मा की शरण में जा कर प्रार्थना करना इत्यादि बातों का उल्लेख किया है । इन्हीं सब कारणों से शिवाजी को विष्णु के अवतार रूप में कहा है, किन्तु इतना सब होते हुए भी उस समय हिन्दू-मुस्लिम का भेद-भाव नहीं था । हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों जाति के सैनिक सेना में होते थे ।

तत्कालीन समाज में अनेक प्रकार के अन्धविश्वासों का प्रचलन था तथा फलित ज्योतिष इत्यादि में लोगों का विश्वास था । अन्ततोगत्वा हम कह सकते कि तत्कालीन समाज में यद्यपि स्त्रियों का सम्मानपूर्ण स्थान था अर्थात् स्त्रियों को आदर की दृष्टि से देखा जाता था, फिर भी शिवभारत में हमें वेश्याओं का वर्णन भी प्राप्त होता है । उस समय समाज में वेश्याएं भी थी ।

शिवभारत में शिवाजी को विष्णु का अवतार कहा है । शिवाजी के ऊपर लिखा गया यह पहला महाकाव्य है । इसके बाद भी अनेक प्रकार के काव्य लिखे गए जिनमें शिवाजी को विष्णु का अवतार कहा गया है जैसे - जयरामकृत "पण्हालिपर्वतगृहणाख्यान", रघुनाथपण्डितकृत "राजव्यवहारकोश" तथा संभाजी द्वारा रचित "बुधभूषणग्रन्थ" इत्यादि ।

बाद के काव्य भी अनेक कवि तथा साहित्यकार शिवाजी के चरित्र को विषय बना कर अपने प्रबन्धों का प्रणयन करते आए हैं, ऐसे प्रबन्धों की संख्या बहुत अधिक है, जिनमें महाकाव्य के अतिरिक्त गद्य काव्य, नाटक इत्यादि भी समाविष्ट होते हैं । इन सभी पर स्वाभाविक रूप से शिवभारत का प्रभाव रहा है । इस प्रकार संस्कृत-साहित्य में शिवाजी विषयक साहित्य को समग्र रूप से देख कर आगे अनुसंधान कार्य करने की आशा रखती हूँ ।